(85) H

सर्वाधिकार स्वरक्षित हैं।

COMPILED

वैदिक जपजी

लेखक

श्री स्वामी शान्ता नन्द जी
(सन्त मंगल देव)

—प्रकाशक—

पं० गुरु प्रसाद: वैद्य कविराज
प्रेम औषधालय जेहलम

वक्रमी सम्वत् १९९०
२७ नवम्बर 57/1933

मिलने का पता—
पं० गुरु प्रसाद: वैद्य
प्रेम औषधालय जेहलम
मूल्य —)

पैरामौंट प्रैस शाहालमी दरवाजा लाहौर
में छपी।

COMPILED

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundat

ओ३म्

। भूमिका ।

प्यारे पाठको ॥ यह छोटी सी वैदिक जपजी ,, नामक पुस्तक साधारण भाषा गुरुमुखीमें वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ गुरुमुखी तथा हिन्दी पढ़े लिखे भक्तनथा भक्तनियां में प्रभु भक्ती संधारणार्थ कुछवर्ष पूर्व कईभक्तों केआग्रह करने पर प्रकाशित की गई थी ॥ अब कई एक प्रभु भक्तों ने पुनः इस को प्रकाशित करवाने की इच्छा प्रगट की है कि इसे हिन्दी तथा गुरुमुखी दोनों भाषाओं में पुनः प्रकाशित किया जावे ॥ इससे साधारण लोगोंको अधिक लाभ की संभावना हो सकती है। इस कारण इस को छपवाने के लिये मैं श्री मान् कविराज

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

०. गुरुप्रसाद वैद्य जेहल की सेवा में समर्पित करता हूं। वे इस पुण्य के भागी बनें। ताकि इन विचारों से साधारण जनता को लाभ प्राप्त हो सके।

इति

शान्तानन्द

rukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

प्रभु प्रेम

मन प्रेम नगर में चल बसिए ।
यहां रहता प्रीतम प्यारा है ॥
ना वहां दीवा ना वहां बाती ।
ऐक समान सदा दिन राती ॥
कोट भानु उजियारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ १

ना वहां कंगला शाह नहीं कोई ।
प्रेम दृष्टि सम सब में होई ॥
सर्व सज्जन इक सारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ २

ऊंच नीच वहां वर्ण न पावें ।
ना वहां भाव घृणा के आवें ॥
प्रेम ही प्रेम पसारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ ३

ना वहां भूख प्यास नहीं व्यापे ।
ज्ञान अमी रस पाइये तापे ॥
बरसत अमृत धारा है ।
यहां रहता प्रीतम ॥ ४

urukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Founda

ना जागृत और स्वप्न सुषुप्ति।
योगी जाने कोई विरला युक्ति।
तुरिया अनहद झनकारा है॥
यहां रहता प्रीतम॥ ५

जन्म मरण का बन्ध ना व्यापे।
काल नेमी का दण्ड ना व्यापे।
मुक्ति पद मंगल द्वारा है।
यहां रहता प्रीतम॥ ६

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

ओ३म्

वैदिक जपजी ॥

। नाम की महिमा ।

द्विपदी

वैदिक जपजी में कही, निरमल महिमा नाम ।
हे भक्तो । श्रद्धा सहित, भजो सदा निष्काम ॥

। वैदिक जपजी का अर्थ ।

॥ कवित्त ॥

वैदिक से वेद कहा, जप से है नाम जाप ।
जी से इस जीव को सम्बोधन कराया है ॥
तात्पर्य अरे जीव जीवन उधार हित वही जाप
जप जो कि वेद ने बताया है ॥
यही इक सार, करे भव सिंधु पार ।
विना जांके संसार, यह असार कहलाया है ॥

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

वही जप जपजी में तत्त्व नाम ओं कहा ।
मङ्गल यह पहली भेंट आप की चढ़ाया है ॥

चतुष्पदी

एक ओं ही है सत्य नाम, जांका कीया सकल जहान।
एक ओं से उपजे वेद, सो ही कहें ओं का भेद ॥
सत्य, चित, आनन्द. है सोई,
घट घट व्यापक है प्रभु जोई ।
जो दीखे सब उसकी माया,
सकल विश्व उस माहिं समाया ॥
अन्दर बाहिर नेड़े दूर,
सब थाईं सो है भरपूर ।
जन्म मरण से सदा न्यारा,
काम क्रोध से किया किनारा ॥
नस नाड़ी बन्धन नहीं जांके,
ब्रह्मादिक गुण गावहिं ताके ।
अचल अडोल नित्य रस एक,
जाने जांके हृदय विवेक ॥

ukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

निर्भय निर्विकार कर्त्तार,
        जाँकि महिमा अपरंपार।
ऐसा ईश वेद बतलावें,
        मङ्गल जो जाने सुख पावें॥

द्विपदी

गति दाता इस विश्व का एक ओं ही ज्ञान।
भव परलय वश जा सके प्राणन का भी प्राण॥

चतुष्पदी

उस विन शब्द सुने नहीं कान,
        रसना रस कर सके न पान।
उस विन नेत्र लखें न रूप,
        वो हैं सब इन्द्रियन का भूप॥
उस विन नाक न लेवे गन्ध,
        उस बिन बिगडे सभी आनन्द।
उस विन हाथ करें नहीं कार,
        उस विन पग नहीं करें विहार॥

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

उस बिन त्वचा स्पर्श त्यागे ।
उस बिन देह छोड जी भागे ।
उस बिन एक स्वास नहीं आवे .
उस बिन मृतक शरीर कहावे ॥
वो है प्राणन का भी प्राण
इस विधि वेद करें व्याख्यान
उस बिन पलक न हिलनी पावे ।
उस बिन बृक्ष पात नहीं लावे ॥
ऐसा ईश वेद बतलावें ।
मंगल जो जाने सुख पावें ॥

द्विपदी

कर्त्ता धर्ता विश्व का हरता वही महेश ।
ओं के ध्यान और जाप से नाशहि सकल क्लेश

चतुष्पदी

उस बिन भानु तजे प्रकाश ।
उस बिन [illegible] होय उदास ॥

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

उस विन वीज न अङ्कुर लावे ।
उस विन वृक्ष फूल नहीं आवे ॥
उस विन फूल नहीं फल देवें ।
उस विन जीव नहीं सुख लेवें ॥
उस विन मेघ न देवें नीर .
उस बिन बंद होवे समीर ।।
उस बिन बल नहीं धारें वीर ।
उस विन छोड दें सब धीर ।
उस बिन सूखें नदियां नाले ।
उस बिन उजड़े गिरि हरियाले ।।
उस बिन धरणी सहे न भार ।
उस बिन सारा विश्व असार ।
उस विन जीव न मुक्ति पावें ।
बार बार जनमें मर जावें ।।
उस विन जग जीवन है कूर ।
उस बिन मानुषजन्म-अधूर ॥
ऐसा ईश वेद बतलावें ।
मंगल जो जाने सुख पावें ॥

द्विपदी

करुणा सिन्धु भगवान का ।

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundat

कर सिमरन हर स्वास ।
जो भक्तों का आश्रा,
सब जग जास निवास ॥

चतुष्पदी

उस विन नहीं दिवस और रैन ।
उस विन नहीं जाग्रत और शयन ॥
उस विन सूने भवन तमाम,
उस विन होसी आवन जान ,,
उस विन तेरा कौन सहाई,
उस ही का चिन्तन सुखदाई ,,
उस विन दामनी दमकत नाहीं,
उस विन मोती ढलकत नाहीं ,,
उस विन सिन्धु विन्दु हो सूखे,
उस विन जीव मरें सब भूखे ,,
उस विन कौन प्राण का दाता,
उस बिन कौन सखा पितु माता ,,
उस बिन कोई न साचा मीत,
उस विन किस संग करे प्रीत ,,

ukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

उस बिन कष्ट ग्रसें तोहें गारे,
उस बिन जावैं यम के द्वारे,,
उस का किसे न पाया अन्त,
कह कह गये अनन्त अनन्त,
ऐसा ईश वेद बतलावें,,
मंगल जो जाने सुख पावें,,

द्विपदी

प्रभु रचना बहु विधि रचि, कैसे करूं व्याख्यान
इस लीला को सो लखे, करे जो उस का ध्यान

चतुष्पदी

उस ने भूमि अनन्त बनाई।
उस ने अद्भुत खेल रचाई।
उसने नाना भांति सजाई,
उस ने बहु बहु भांति बसाई॥
उसने रच दिए नदियां नाले,
जो उत्तम निर्मल जल वाले॥
उस ने अनेक गिरि रच दीने।

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

बहु बहु भांति सुशोभित कीने ॥
उस ने बूटे बेल उगाये ।
उस ने नाना फूल सजाये ॥
उस ने दिये मेवे बहु भांति .
उस की रचि लखे को जांति ॥
उस ने रचे समुद्र भारे ।
जिन का कोई न पावे पारे ॥
उस ने स्वर्ग नरक दोऊ कीने ,
उस ने कर्मन के फल दीने ॥
उस ने मुक्ति राह बतलाया ,
उस ने वेद ज्ञान सुनाया ॥
ऐसा ईश वेद बतलावें ,
मंगल जो जाने सुख पावें ॥

द्विपदी

केहीं कारण वे एक हैं, उत्तम हैं केहीं काज ॥
यह वर्णन आगे करुं , ज्यों सब के महाराज ॥

लावणी

जब स्वरूप में थी जब सृष्टि :

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

न कोई उस में विकार ही था ।
न थी चन्द्र सूर्य्य की रचना ।
जब सारे अन्धकार ही था ॥
न पहाड़ और नदियां नाले ।
न पृथ्वी विस्तार ही था ॥
सत्य; चित, आनन्द, निरञ्जन,
निर्मल एक ओंकार ही था ॥

चतुष्पदी

उस विन दूजा और न पाया ।
इस कारण वह एक कहाया ।
गायत्री गुरु मन्त्र सार,
उस के आदि एक ओंकार ।
वेद मन्त्रों के आदि अन्त,
ओ३म् उच्चार हिं साधु सन्त ।
ओं नाम ब्रह्मा जप कीना,
आनन्द मुक्ति का पद लीना ।
ओं नाम जपयो श्री राम,
सफल भये ता के सब काम ।

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundat

ओं नाम जप कृष्ण बताया,
जिस का गीता में यश गाया ॥
ओं नाम की ध्रुव लिवलाई,
भये भक्त के ध्यान सहाई ॥
ओं नाम जप वेद बतावें,
मंगल मनश करें सुख पावें ॥

द्विपदी

एक ओं के जाप से, सिद्ध होंय त्रयलोक।

आत्मज्ञान प्रकाश से, मिट जावें सब शोक ॥

। चतुष्पदी ।

ओं नाम जप सिद्ध कहाये, (कहावे)
तां के काल निकट नहीं आवे ॥
सुख पूर्वक तजदें शरीर,
तां को कोऊ न होवत पीर ॥

rukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

ओं नाम जप गगन हीं गमना।
ओं नाम जप हो वल पवना।
ओं नाम जप मुक्त कहावें।
जन्म मरण बन्धन नहीं पावें।
अनेक जन्म को जाने बात।
हरि सम्पत्ति उन के हाथ।
सब शत्रु बन जावें मीत।
कर मन ? ओं नाम संग परीत।
क्षुधा पिपासा दोऊ नसावें।
संयम से अमृत रस पावें।
रवि ससि लोक दोऊ में जावें।
देव लोक ओं लोक कहावें।
तीन काल का जाने हाल।
ओं नाम जप भये निहाल।
ऋग, यजु, साम, अर्थव, उपदेश
दृढ़ कर तेरे मिटें क्लेश।
ऋषि यहि उपदेश सुनावें।

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Founda

मंगल मनन करें सुख पावें।

द्विपदी

गुरु चरणन में बैठ कर, नाम दान को पाय।
यथा विधि से जाप कर' त्रय तप तपुष बुझाय॥

चतुष्पदी

ये नेत्र देखें नहीं वाँ को।
सच्चिदानन्द कहें हैं जाँ को॥
जिह्वा भी रस नहीं बतावे।
कानों से वह सुना न जावे।
पकड़ सके नहीं उस को हाथ।
छुआ न जाय त्वचा के साथ।
न पहुंचे पग उस के द्वार।
उसकी महिमा अपरम्पार।
नासिका भी कर सकें न ज्ञान।
वाणी से न हो व्याख्यान।
इन्द्रिय गण नहीं उस को पावें।

urukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

हार खाय वस चुप रह जावे।
पांचभूत से बना शरीर।
वन्हि वारि भुवि व्योम समीर ।
पाँच भूत से सब संसार।
तिस पर इन्द्रियन का अधिकार।
इस कारण इन्द्रियें नही पावें।
प्रभु पाँच से परे कहावे ।
हरि हर घट घट माहिं समावें।
मंगल योग युक्ति से पावें।

द्विपदी

यम नियमों की साधना, भक्त जनों का धर्म।
इस के भीतर है छुपा, तत्व ज्ञान का मर्म॥
शम दम आदि नियम यम तजे भजे भगवान
ऐसे मन्द मति जीव की, भक्ति निष्फल मान

चतुष्पदी

धर्म हीन नर हिंसा वादी,

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Founda

तां संग उपजे अनेक उपाधि ॥

धर्म हीन नर मिथ्या चारी ,

तां लग हों अनर्थ अति भारी ॥

धर्म हीन नर चोरी करे ,

पाप कर्म से कवहु न डरे ॥

धर्म हीन नर हो व्यभिचारी ,

नारी पतिव्रत धर्म धन हारी ॥

धर्म हीन नर माया दास ,

त्याग न आवे तांके पास ॥

धर्म हीन नर निर्मल नाहीं ,

मल विक्षेप मल तहिं मम माहिं ॥

धर्म हीन के न संतोष '

स्वार्थ पाप लगा तहिं दोष ॥

धर्म हीन नर नातप धारी ,

तिस का जीवन सङ्कट कारी ॥

धर्म हीन स्वाध्याय न करे ॥

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

इष्ट देव हृदय नहीं धरे ॥

१५.३/१६ ८८,

२२६३२

धर्म विसार जपे जो नाम,
तां की भक्ति होये सकाम '
पाप पुण्य का सो फल पावे,
आवा गमन फांस गल लावे ॥
धर्म हीन नर क्यों जग आये '
आ भूमि पर पाप फ़ैलाये ॥
धर्म हीन नर कुल का घाती,
ता संग डूबे सगरि जाति ।
धर्म हीन नर दया के योग,
तां के काटें ज्ञानी रोग ।
रे नर ? लग सद् जन की शरणा,
भव सागर से जो तुध तरणा ।
ऋषि यहि उपदेश सुनावें,
मंगल मनन करें सुख पावें ।

द्विपदी

धर्मी धर्म न त्यागिये; करे प्राण का त्याग ।
तव पापों से मुक्त हों, उपजे प्रभु संग राग ॥

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundat

चतुष्पदी

धर्म विहीन जपे जो नाम,
सुफल न होवें तां के काम ।
जिवि किसान हल नहीं चलावे,
बञ्जर भूमि बीज गिरावे ।
पहिले कर नर ! धर्म ज्ञान,
पीछे कर ईश्वर का ध्यान ।
मांग यही ईश्वर से दान,
मोमन लेय धर्म को मान ।
पहली सीढी यही तुम्हारी,
पीछे कर आगे की त्यारी ।
सीड़ी सीढ़ी ऊपर चढ़ जावें,
जो कूदें तब जान गवावें ।
एक एक अक्षर जो पावे,
एक दिवस पण्डित बन जावे ।
कर्म उपासना तृतीय ज्ञान,
Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation
तीनों सीढ़ी इस की आन ।

यह संसार समुद्र अपार,
इस विधि उतरो इस से पार ।
वेद यही उपदेश सुनावे,
मंगल मनन करें सुख पावें ।

प्रार्थना

द्विपदा

दीनन की सुध लीजिए, हे प्रभु ! दीन दयाल ।
कर जोरे दर पै खड़े, तेरे बाल गुपाल ॥

चतुष्पदा

हे प्रभु ! तुम हो परमानन्द,
सब को दे रहे आप आनन्द ।
हे प्रभु ! तुम हो परोपकारी,
तुझ से जीवित सृष्टि सारी ॥

हे प्रभु ! तुम हो सूरज प्यारे,

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundat

तुझ से चमकें ब्रह्मण्ड सारे।

हे प्रभु तुम हो अति बलवान,
तुझ से बल ले सकल जहान।

तुम हो प्रभु अनन्त अपार,
नमस्कार तोहे बारम्बार ।

हे प्रभु ? तुम हो दया के नाथ,
तीन लोक पै तेरा हाथ।

हे प्रभु ? तुम हो सब के दाता,
तुमरा दिया हम सब खाते।

हे प्रभु ! तुम हो पितु और माता,
तुझ बिन नहीं किसी संग नाता।

हे प्रभु ? तुम हो अति अनूप,
हर वस्तु में तेरा रूप ।

अणु अणु में तू ही समाया,
मंगल देव तव शरणी आया।

द्विपदी

वैदिक जप पूर्ण भयो, सुनो सभी नर नार।
पढ़े सुने जो दृढ़ करे, भव से उतरे पार ॥

rukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

ओं शम्

आवश्यक सूचना

इस पुस्तक के पढ़ने तथा सुनने का फल कहते हैं। जो नर नारी इस को पढ़ तथा सुन कर इस के कथनानुसार आचरण करेंगे उनको ये चार फल प्राप्त होंगें।

(१) मन की शुद्धि।
(२) नाम में प्रीति।
(३) ईश्वर विश्वास।
(४) शांति।

निवेदक—

शान्ता नंद

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundat

सूचना

यह औषधें विधि पूर्वक उत्तम औषधों से बनने के कारण निहायत फायदे मद साबत हो रही हैं इस लिये लोक हितार्थ प्रकाशित की है

अमृत जीवन

यह प्रेम औषधालय का रत्न है रासायनिक उत्तम औषधी से बनता है वीर्य का पतला होना, अन्य कुटेवोंसे वीर्य क्षय हो जाना स्वप्न दोष आदि विकारोंमें अत्यन्त उत्तमहै चेहरा कान्ती वान शरीर बलवान हृष्ट पुष्ट बनाता है वीर्य दोष वालों को नव जीवन प्रदान करताहै एक२ मात्रा प्रातः सायं दुग्ध से सेवन करे कवज रहती हो तो तीन से ६ मासा तक त्रिफला चूर्ण रात को सोते वकत खाएँ अमृत जीवन एक पैकट १।।) रु० त्रिफला चूर्ण १ पैकट आध-पाव ॥)

बाल पुष्ट शरबत

बच्चों के कवज दस्त का साफ न होना

urukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundati

आम या हरे पीले दस्तोंका आना उल्टी खांसी बुखार दांत निकलते वक्तकी तकलीफों में राम बाण है कामत १ शीशी एक पाव १) एक या दो छोटे चमच शरबत में पानी मिला कर दिन में दो बार पिलाऐं ।

द्राक्षारिष्ट तथा आसव

भूख बढ़ाता है दस्त साफ लाता है खांसी तथा जुकाम दमेको दूर करताहै दिलको ताकत देताहै खून बढ़ाताहै पीतेही दिल को खुश करता और थकावट भाग जाती है भोजन के बाद पीना चाहिये मात्रा२ तोला द्राक्षासव १ पा. ।।।)

चन्द्र प्रभावटी

खून की कमी कमजोरी प्रमेह तथा अन्य

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Founda

धातु रोगको उत्तम औषधहै कीमत ॥)तोला प्रातः सायं एक गोती दूध के साथ ।

अशोकारिष्ट

यह औषध स्त्रियों की जीवन दाता है मासिक धर्म (हैज़) ज्यादा आने में जो स्त्रियों को बहुत दुर्बल कर देता है लाभदायक है दोनो समय भोजन के एक घण्टा वाद१ खुराक १। तोला पीनी चाहिये १ शीशी १पा ॥।)

सुपारी पाक

स्त्रियों के पुदर रोग के लिये आयुर्वेद का चमत्कार सुपारीपाक है प्रातः सायं दूध के साथ खाना चाहिये गर्भा वस्था में भी दिया जाता है मूल्य १ पैकू ३ छ. १)

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

सौभाग्य शुण्ठी

प्रसव काल की हर एक मरज़ के लिये अति लाभदायक है ६ मासा खुराक अर्क इलायची या दुग्ध के साथ दें॥ स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इस की बडी महिमा वर्णन की है प्रसव से १॥ वर्ष तक सेवन कर सक्ते हैं इस से दूध भी बढ़ता है कीमत १ पैकट आध पाव १)

नोट—इसके अतिरिक्त सभी शास्त्रीय औषध भस्मे रसादि उचित मूल्य पर मिल सक्ती हैं

पता—

कविराज प० गुरु प्रसाद:
प्रेम आयुर्वैदिक औषधालय जेहलम

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Founda

ईश्वरीय बोध

व्यष्टि समष्टि रूप से सारे,
इस जग में जो कुछ है
सब ईश्वर से आच्छादित है,
शून्य नहीं उस से कुच्छ है।
त्यागभाव को आगे रख कर,
तुम इस जग का भोग करो
सब कुच्छ ईश्वर का है ऐसा,
मानो कभी न लोभ करो
दूर समीप वही गति वर्जित,
सब ही को गति देता है।
योगी जनों को बाहर भीतर,
वही दिखाई देता है॥
ईश्वर के आश्रित भूतों को,
सब भूतों में ईश्वर को।
जो देखे फिर कोई संशय,
कभी न होता उस नर को॥
आत्मा ही को जब भूतों में,
अनुभव करने लगता है

DIGITIZED 20-10 07-2005
Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation

एक भाव से तब ज्ञानी का,
मोह शोक सब भगता है ॥
ज्ञानी प्राप्त करे उस को जो शुक्र
शरीर विवर्जित है।
व्रण नस नाडी रहित शुद्ध सब
पापों से वह वर्जित है ॥
मन का साक्षी सर्व व्यापक,
स्वयंसिद्ध सर्वज्ञ वही
प्रजा मात्र के हित कर्ता है,
नित्य नियम से सृष्टि वही
श्रेष्ट मार्ग पर सदा चलाओ,
उन्नति के हित सब को,
तेजोमई जो जो कर्म हमारे
तुम ही जानते सब को,
कुटिल पाप से शुद्ध कराओ,
जिस से उसे भगावें
हो कर शुद्ध सदा हम तेरा,
करे ध्यान गुण गावे ॥
हे परमेश्वर सच्चाई का,
मुख सोने से ढका हुआ

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Founda

उस को देख नहीं सकते हम,
मन सोने में फंसा हुआ ॥
बन्धन रहित ईश के अन्दर,
जो है पुरुष वही मैं हुं
सर्व व्यापक है ईश्वर तो,
मैं इन प्राणों में स्थित हूं

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः
निवेदकः
गुरुप्रसादः

Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation